श्री गंगा जी की आरती

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता ।

जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता | ओ३म् जय..

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता ।

शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता ।। ओ३म् जय...

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता ।

कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता ।। ओ३म् जय...

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता ।

यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता ।। ओ३म् जय...

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता ।

सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता ।। ओ३म् जय...

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड

atozpe.in